सूरह — एक कहानी

सूरह अद-दुख़ान

धुआँ

पूरा सफ़र — मुबारक रात, और एक सल्तनत जिस पर कोई न रोया —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 44 • 59 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिम्-मुबारकह। इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन

3. बेशक हमने इसे एक मुबारक रात में उतारा। बेशक हम डराने वाले हैं।

फ़ीहा युफ़्रकु कुल्लु अम्रिन हकीम

4. उस रात हर हिकमत वाला काम अलग अलग कर दिया जाता है।

फ़र्तक़िब यौम त'तिस्-समा-उ बि-दुख़ानिम्-मुबीन

10. तो उस दिन का इंतिज़ार करो जब आसमान एक ज़ाहिर धुआँ ले आएगा।

फ़-मा बकत 'अलैहिमुस्-समा-उ वल्-अर्ज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन

29. तो उन पर न आसमान रोया न ज़मीन, और न उन्हें मोहलत दी गई।

व मा ख़लक़्नस्-समावाति वल्-अर्ज़ व मा बैनहुमा ला'इबीन

38. और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया।

इन्नल्-मुत्तक़ीन फ़ी मक़ामिन अमीन

51. बेशक ख़ौफ़-ए-ख़ुदा वाले एक अमन वाली जगह में होंगे।

एक मुबारक रात

बेटा, ये सूरह 'हा मीम' और 'खुली किताब' की क़सम से खुलती है — और फिर एक ऐसी चीज़ का एलान करती है जिसने तारीख़ बदल दी: '**इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिम्-मुबारकह** — बेशक, **हमने इसे** एक **मुबारक रात** में **उतारा** — इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन — बेशक, हम **डराने** वाले हैं।'

उलमा इस मुबारक रात को रमज़ान में **लैलतुल-क़द्र** के तौर पर समझाते हैं — वो रात जिसका सूरह अल-क़द्र में ज़िक्र है, जिस पर क़ुरआन मुकम्मल तौर पर आसमान-ए-दुनिया पर उतारा उस से पहले कि वो टुकड़ों में नाज़िल हो।

'**फ़ीहा युफ़्रकु कुल्लु अम्रिन हकीम** — उस रात **हर हिकमत वाला काम अलग अलग** कर दिया जाता है — अम्रम्-मिन 'इंदिना — हमारी तरफ़ से एक हुक्म।'

बेटा, '**युफ़्रिक़ु**' — जुदा, अलग, तक़सीम किया हुआ। उस रात आने वाले साल के फ़ैसले फ़रिश्तों में बाँट दिए जाते हैं: रिज़्क़, उम्रें, वाक़िआत। **सब कुछ अल्लाह को अज़ल से मालूम, मगर उस रात अमल के लिए सौंप दिया जाता।**

'**रहमतम्-मिर्-रब्बिक** — तुम्हारे रब की तरफ़ से एक **रहमत** के तौर पर।' बेटा, ग़ौर कीजिए कि **पूरी वही एक लफ़्ज़ में सिमट गई: रहमत।**

और फिर सूरह हमें याद दिलाती है कि ये रब कौन है: 'रब्बिस्-समावाति वल्-अर्ज़ि व मा बैनहुमा **इन कुन्तुम मूक़िनीन** — आसमानों और ज़मीन का और जो उन के दरमियान है उसका रब, **अगर तुम यक़ीन रखते हो** — ला इलाह इल्ला हुव युह्यी व युमीत — उसके सिवा कोई माबूद नहीं; वो ज़िंदगी देता और मौत देता है — **रब्बुकुम व रब्बु आबा-इकुमुल्-अव्वलीन** — तुम्हारा रब और तुम्हारे **पहले बाप-दादा** का रब।'

बेटा, वो आख़िरी जुमला ख़ुद एक ख़ामोश दलील है: **जिस ख़ुदा की तरफ़ तुम्हें बुलाया जा रहा है वो कोई नई ईजाद नहीं। वो तुम्हारे आबा का रब था, उस से पहले कि बुत तराशे गए।**

धुएँ का दिन

'बल हुम फ़ी शक्किंय्-यल'अबून — बल्कि, वो **शक** में **खेल** रहे हैं।' बेटा, **शक के साथ खेल** — यही उस दिल की हालत है जिसने सवाल को कभी संजीदगी से नहीं लिया।

'**फ़र्तक़िब यौम त'तिस्-समा-उ बि-दुख़ानिम्-मुबीन** — तो उस दिन का **इंतिज़ार** करो जब **आसमान** एक **ज़ाहिर धुआँ** ले आएगा — **यग़्शन्-नास** — लोगों को **ढाँप** लेगा — हाज़ा 'अज़ाबुन अलीम — ये एक दर्दनाक अज़ाब है।'

'**रब्बनक्-शिफ़ 'अन्नल्-'अज़ाब इन्ना मु'मिनून** — ऐ हमारे रब, हम से अज़ाब **हटा** दे; बेशक, **हम ईमान वाले** हैं!'

बेटा, उलमा इस धुएँ के बारे में मुख़्तलिफ़ हैं, और दोनों वज़ाहतें सबक़-आमोज़ हैं।

इब्ने मसऊद (रज़ि0) ने इसे एक ऐसी चीज़ के तौर पर समझाया जो पहले ही हो चुकी थी: जब क़ुरैश इनकार पर अड़ गए, नबी ﷺ ने उन के ख़िलाफ़ दुआ की, और वो एक **सख़्त क़हत** में मुब्तला हुए — इतनी सख़्त कि लोग आसमान की तरफ़ देखते और, भूक और निज़ारी से, उसे **गोया धुएँ से भरा** पाते। अपनी बे-बसी में वो नबी ﷺ के पास आए, आप से राहत की दुआ की इल्तिजा करते, **ईमान का वादा करते।** राहत आई — **और वो अपने पुराने तरीक़ों पर लौट गए।**

दूसरे सहाबा और उलमा इस राय के थे कि ये एक निशानी है जो **क़ियामत से पहले अभी आनी है**, एक असली धुआँ जो ज़मीन को ढाँप लेगा।

बेटा, और जो भी वज़ाहत कोई रखे, आयतों का सबक़ एक जैसा है, **और ये हमारे बारे में एक सबक़ है**: 'अन्ना लहुमुज़्-ज़िक्रा व क़द जा-अहुम रसूलुम्-मुबीन — उन के लिए **नसीहत कहाँ**, जब एक खुला रसूल उनके पास पहले ही आ चुका? **सुम्म तवल्लौ 'अन्हु** — फिर वो उस से **मुँह मोड़** गए।'

'**इन्ना काशिफ़ुल्-'अज़ाबि क़लीलन इन्नकुम 'आइदून** — बेशक, हम अज़ाब **थोड़ा हटा** देंगे — मगर **बेशक, तुम लौट आओगे** (कुफ़्र की तरफ़)।'

बेटा, **ये क़ुरआन में इंसानी फ़ितरत के सब से ईमानदार बयानों में से एक है।** मुसीबत में: *'या अल्लाह, मुझे बचा ले और मैं बदल जाऊँगा।'* मुसीबत के बाद: **बिल्कुल वही ज़िंदगी।**

हम में से हर एक ने ये किया है। अस्पताल के कॉरिडोर में हम वादे करते हैं। जब बीमारी हटती है, **वादे ख़ामोशी से ख़त्म हो जाते हैं।** अल्लाह कहते हैं: **हम जानते हैं — तुम लौट आओगे।**

मूसा और एक सल्तनत जिस पर कोई न रोया

फिर सूरह मूसा (अलैहि0) और फ़िरऔन की कहानी सुनाती है — एक ख़ास ज़ोर के साथ।

'व लक़द फ़तन्ना क़ब्लहुम क़ौम फ़िर'औन व जा-अहुम रसूलुन करीम — और उन से पहले हमने फ़िरऔन की क़ौम को आज़माया, और उनके पास एक **मोअज़्ज़ज़ रसूल** आया — **अन अद्दू इलय्य 'इबादल्लाह** — (ये कहते हुए): **अल्लाह के बंदे मेरे हवाले करो** — इन्नी लकुम रसूलुन अमीन — बेशक, मैं तुम्हारे लिए एक **अमानतदार** रसूल हूँ।'

बेटा, उसका मुतालबा ग़ौर कीजिए: **मुझे अल्लाह के बंदे दो।** वो ग़ुलाम बनाए गए लोगों को आज़ाद करने आया, **उन्हें उनके असली लक़ब से पुकारते हुए** — 'बनी इसराईल' नहीं, बल्कि '**अल्लाह के बंदे**'। बेटा, **एक मोमिन मज़लूमों को यूँ देखता है: एक क़िस्म के तौर पर नहीं, बल्कि उन लोगों के तौर पर जो अल्लाह के हैं। **

'व अन ला त'लू 'अलल्लाह — और अल्लाह के सामने **ग़ुरूर** मत करो — **व इन्नी 'उज़्तु बि-रब्बी व रब्बिकुम अन तर्जुमून** — और बेशक, **मैंने अपने रब और तुम्हारे रब में पनाह ली**, इस से कि तुम मुझे **संगसार** करो।'

बेटा, अपने दौर का सब से अज़ीम नबी, अपने दौर के सब से बड़े ज़ालिम के सामने खड़ा, **और उसकी हिफ़ाज़त कोई लश्कर नहीं — 'मैंने अपने रब में पनाह ली' है।**

फिर अल्लाह ने उसे हुक्म दिया: 'फ़-अस्रि बि-'इबादी लैलन इन्नकुम मुत्तब'ऊन — मेरे बंदों के साथ **रात** को चलो; बेशक, तुम्हारा **पीछा** किया जाएगा — **वत्रुकिल्-बह्र रह्वा** — और **समुंदर** को उसी तरह **सुकून** में, **फटा हुआ छोड़** दो — इन्नहुम जुन्दुम्-मुग़्रक़ून — बेशक, वो एक **डूबने वाला लश्कर** हैं।'

बेटा, हुक्म ग़ौर कीजिए: '**उत्रुकिल-बह्र रह्वा**' — समुंदर को जैसा है वैसा छोड़ दो, खुला और पुर-सुकून। **मूसा को उसे अपने पीछे बंद नहीं करना था। खुला रास्ता ख़ुद जाल था**: पीछा करता लश्कर पानी के बीच एक सड़क देख कर उस से रह न सका।

'**कम तरकू मिन जन्नातिंव्-व 'उयून** — **कितने बाग़ और चश्मे** उन्होंने **छोड़** दिए — व ज़ुरू'इंव्-व मक़ामिन करीम — और खेतियाँ और मोअज़्ज़ज़ मक़ामात — व न'अ्मतिन कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन — और **ऐश** जिसमें वो मज़े में

थे!'

बेटा, इस आयत को महसूस कीजिए। एक पूरी तहज़ीब की दौलत — बाग़, नहरें, महल, आसार जो आज तक खड़े हैं — **सब एक सुबह में छूट गईं।** मालिक डूब गए, और **जायदाद रह गई, दूसरे लोगों का इंतिज़ार करती**: 'कज़ालिक व औरस्नाहा क़ौमन आख़रीन — यूँ, और हमने एक दूसरी क़ौम को इसका **वारिस** बना दिया।'

और फिर, बेटा, वो आयत जो इस हिस्से को उसकी ना-क़ाबिल-ए-फ़रामोश चुभन देती है: '**फ़-मा बकत 'अलैहिमुस्-समा-उ वल्-अर्ज़** — **तो उन पर न आसमान रोया न ज़मीन** — व मा कानू मुन्ज़रीन — न उन्हें **मोहलत** दी गई।'

बेटा, समझिए इसका मतलब क्या है। **फ़िरऔन ज़मीन की सब से बड़ी सल्तनत पर हुकूमत करता था।** उसे एक ख़ुदा की तरह पूजा जाता था। उसकी मौत दुनिया की तारीख़ की सब से बड़ी त्रासदी होनी चाहिए थी। **और अल्लाह दर्ज करते हैं: कोई न रोया।** एक भी अहम शख़्स नहीं, न आसमान, न ज़मीन।

उलमा ने इस आयत को ख़ूबसूरती से समझाया: उन्होंने कहा **आसमान और ज़मीन मोमिन के लिए रोते हैं** — उसकी नमाज़ की जगह के लिए जहाँ वो सजदा करता था, और आसमान में उस जगह के लिए जहाँ उसके नेक अमल चढ़ते थे। **और ज़ालिम के पास ऐसी कोई जगह न थी।** उसने ज़मीन पर कोई जा-नमाज़ न छोड़ी, और आसमान में कोई चढ़ते अमल नहीं। **तो किसी के पास उसे याद करने की कोई वजह न थी।**

बेटा, ये एक ऐसा सवाल है जिसे आज रात ख़ुद से पूछने लायक़ है: **जब मैं जाऊँगा, क्या इस ज़मीन के किसी टुकड़े के पास मुझ पर रोने की वजह होगी? क्या कोई जगह है जहाँ मैं बा-क़ायदा अपनी पेशानी रखता हूँ? क्या आसमान में कोई सड़क है जिसे मेरे चढ़ते अमल ने घिसा है?**

क्या तुमने समझा था कि तुम बे-मक़सद बनाए गए?

फिर सूरह मुनकिरों के मुतालबे को मुख़ातिब करती है: 'इन हिय इल्ला मौततुनल्-

ऊला व मा नह्नु बि-मुन्शरीन — बस हमारी पहली मौत है, और हम दोबारा ज़िंदा नहीं किए जाएँगे। **फ़'तू बि-आबा-इना इन कुन्तुम सादिक़ीन** — तो हमारे **बाप-दादा वापस ले आओ**, अगर तुम सच्चे हो!'

बेटा, वो दोबारा ज़िंदा होना **एक तमाशे की तरह** चाहते थे — *मेरे दादा को वापस ले आओ ताकि मैं देख लूँ।* और अल्लाह उन से ज़्यादा ताक़तवर एक क़ौम की तरफ़ इशारा कर के जवाब देते हैं: 'अ हुम ख़ैरुन अम क़ौमु तुब्बइंव्-वल्-लज़ीन मिन क़ब्लिहिम — क्या ये बेहतर हैं, या **तुब्बा'** की क़ौम और वो जो उन से पहले थे? अह्लक्नाहुम इन्नहुम कानू मुज्रिमीन — हमने उन्हें तबाह किया; बेशक, वो मुजरिम थे।'

और फिर, बेटा, वो आयत जो इंसानी वुजूद के सब से गहरे सवाल का जवाब देती है: '**व मा ख़लक़्नस्-समावाति वल्-अर्ज़ व मा बैनहुमा ला'इबीन** — और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है **खेल के तौर पर नहीं बनाया** — **मा ख़लक़्नाहुमा इल्ला बिल्-हक़्क़ि** — हमने उन्हें सिर्फ़ **हक़** के साथ बनाया — **व लाकिन्न अक्सरहुम ला य'लमून** — मगर उन में से **ज़्यादातर नहीं जानते।**'

बेटा, '**ला'इबीन**' — **खेलते हुए।** ये वसीअ, ठीक, हैरान-कुन कायनात **कोई खिलौना नहीं जो तफ़रीह के लिए जोड़ी गई।** इसका एक मक़सद है, **और आपका भी।** एक शख़्स जो यूँ जीता है गोया कोई मक़सद न हो **वो उस पूरे डिज़ाइन की नफ़ी कर रहा है जिसके अंदर वो खड़ा है।**

ज़क़्क़ूम का दरख़्त, और अमन वाली जगह

फिर सूरह दोनों मंज़िलें दिखाती है, और तज़ाद सख़्त है।

'**इन्न शजरतज़्-ज़क़्क़ूम** — बेशक, **ज़क़्क़ूम का दरख़्त** — **त'आमुल्-असीम** — **गुनहगार** का खाना है — **कल्-मुह्ल** — **गाढ़े तेल**, पिघले धात जैसा — **यग़्ली फ़िल्-बुतून** — ये पेटों में **खौलता** है — कग़ाल्यिल्-हमीम — खौलते पानी के उबलने की तरह।'

और हुक्म: 'ख़ुज़ूहु फ़'तिलूहु इला सवा-इल्-जहीम — इसे पकड़ो और उस भड़कती आग के बीच में **घसीटो** — सुम्म सुब्बू फ़ौक़ र'सिही मिन 'अज़ाबिल्-हमीम — फिर उसके **सर** पर खौलते पानी का अज़ाब **उंडेलो** — **ज़ुक़ इन्नक अन्तल्-'अज़ीज़ुल्-करीम** — **चख! बेशक, तू ही तो इज़्ज़तदार, मोअज़्ज़ज़ है!**'

बेटा, उस आख़िरी लाइन का **कुचल देने वाला तंज़** महसूस कीजिए। दुनिया में उसे *'इज़्ज़तदार', 'मोअज़्ज़ज़', 'साहब', 'हुज़ूर'* कहा जाता था। **वो लक़ब उस लम्हे उसे पढ़ कर सुनाए जाते हैं।** हर वो इज़्ज़त का लक़ब जो हम इस ज़िंदगी में जमा करते हैं **वहाँ बहुत अलग लगेगा अगर वो तक़्वा पर न बना हो।**

और फिर सूरह पलटती है: '**इन्नल्-मुत्तक़ीन फ़ी मक़ामिन अमीन** — बेशक, ख़ौफ़-ए-ख़ुदा वाले एक **अमन** वाली **जगह** में होंगे — फ़ी जन्नातिंव्-व 'उयून — बाग़ों और चश्मों में — यल्बसून मिन सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रक़िम्-**मुतक़ाबिलीन** — नफ़ीस रेशम और दीबा पहने, **एक दूसरे के आमने-सामने।**'

बेटा, '**मक़ामिन अमीन**' — एक **अमन** वाली जगह। सोचिए इस लफ़्ज़ की क़ीमत: इस दुनिया में हर जगह के साथ एक ख़ौफ़ जुड़ा है — नौकरी जा सकती है, सेहत बिगड़ सकती है, अपने छूट सकते हैं। **वहाँ, जगह ख़ुद 'अमीन' है।**

और '**मुतक़ाबिलीन**' — आमने-सामने। **किसी की पीठ किसी की तरफ़ नहीं।** न कोई शिकवा, न कोई कीना, न कोई पुरानी बात।

और सूरह अपने इख़्तिताम पर बताती है कि ये किताब आसान क्यों की गई: '**फ़-इन्नमा यस्सर्नाहु बि-लिसानिक ल'अल्लहुम यतज़क्करून** — तो हमने इसे **तुम्हारी ज़ुबान** में **आसान** कर दिया, ताकि वो **नसीहत** पकड़ें — **फ़र्तक़िब इन्नहुम मुर्तक़िबून** — तो **इंतिज़ार** करो; बेशक, वो भी इंतिज़ार कर रहे हैं।'

बेटा, दोनों तरफ़ इंतिज़ार कर रहे हैं — **फ़र्क़ सिर्फ़ ये है कि किसे मालूम है कि अंजाम क्या आ रहा है।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. लैलतुल-क़द्र में साल के फ़ैसले बाँटे जाते हैं — और पूरी वही एक लफ़्ज़ में सिमटी: **रहमत।**

2. जिस ख़ुदा की तरफ़ बुलाया जा रहा है वो नई ईजाद नहीं — वो आपके आबा का रब था, बुतों से पहले।

3. 'तुम लौट आओगे' — मुसीबत में किए वादे ख़ुद जाँचिए; अल्लाह हमारी फ़ितरत हम से बेहतर जानते हैं।

4. मज़लूमों को 'अल्लाह के बंदे' कहिए — और अपनी हिफ़ाज़त लश्कर में नहीं, अपने रब में तलाश कीजिए।

5. 'न आसमान रोया न ज़मीन' — आज रात पूछिए: क्या कोई जा-नमाज़ है जो मुझे याद करेगी? कोई सड़क है जिसे मेरे अमल ने घिसा हो?

6. ये कायनात 'ला'इबीन' — खेल के तौर पर — नहीं बनाई गई; तो बे-मक़सद जीना पूरे डिज़ाइन की नफ़ी है।

7. दुनिया के इज़्ज़त वाले लक़ब वहाँ बहुत अलग लगेंगे अगर वो तक़्वा पर न बने हों।

या अल्लाह, हमें उन में बनाइए जिन पर आसमान और ज़मीन रोएँ, और हमें उस अमन वाली जगह में जगह अता फ़रमाइए। आमीन।